क्यूँ-क्यूँ छोरी

''पर क्यूँ?''

छोटी सी लड़की थी वह, करीब दस साल की। एक बड़े से सांप का पीछा कर रही थी। मैं उसके पीछे भागी, उसकी चोटियां पकड़ घसीट कर लायी, उस पर चिल्लायी, ''ना, मोइना, ना!''

''क्यूँ?'' उसने पूछा।

''वो कोई धामन-वामन नहीं है, नाग है, नाग!''

''तो नाग को क्यूँ न पकड़ूं?''

''क्यूँ पकड़ो?''

''पता है हम सांप खाते हैं। मुंडी काट दो, चमड़ा बेच दो, मांस पका लो।''

''नहीं, इस बार नहीं।''

''हाँ, हाँ, करूंगी।''

''पर क्यूँ?''

मैं उसे समिति के आफिस तक घसीट कर

लायी। वहां उसकी माँ खीरी एक टोकरी बुन रही थी।

"चलो थोड़ा आराम कर लो," मैंने कहा।

"क्यों?"

"क्यों नहीं? थकी नहीं हो क्या?"

मोइना ने सिर हिलाया। "बाबू की बकरियां कौन घर लायेगा? और लकड़ी लाना, पानी लाना, चिड़िया पकड़ने का फंदा लगाना, ये सब कौन करेगा?"

खीरी ने कहा, "बाबू ने जो चावल भेजा है, उसके लिये उसे धन्यवाद देना न भूलना।"

"क्यूँ? क्यूँ दूँ धन्यवाद उसे? उसकी गोशाला धोती हूँ, हजारों काम करती हूँ उसके लिये। कभी धन्यवाद देता है मुझे? मैं क्यूँ उसे धन्यवाद दूँ?"

मोइना अपने काम पर भाग गयी। खीरी सिर हिलाती रह गयी। "ऐसा बच्चा नहीं देखा कभी। बस कहती रहती है 'क्यूँ'? 'क्यूँ?'—गाँव के पोस्टमास्टर ने तो उसे 'क्यूँ क्यूँ छोरी' का नाम दे रखा है।"

"मुझे तो अच्छी लगती है मोइना।"

"इतनी जिद्दी है कि एक बात पकड़ ले तो उससे हटती नहीं।"

मोइना आदिवासी लड़की थी, शबर जाति की। शबर लोग गरीब और भूमिहीन थे। पर बाकी शबर लोग कभी शिकायत करते सुनाई नहीं देते थे, सिर्फ मोइना ही थी जो सवाल पर सवाल करे जाती।

"क्यूँ मुझे मीलों चलना पड़ता है नदी से पानी लाने के लिये? क्यूँ रहते हैं हम पत्तों की झोपड़ी में? हम दिन में दो बार चावल क्यों नहीं खा सकते?"

मोइना गाँव के बाबुओं की बकरियां चराने का काम करती, पर न तो वह अपने आप को दीन-हीन समझती थी, न ही मालिकों का अहसान मानती। वह अपना काम करती, घर आ जाती, और बुदबुदाती रहती, "क्यों उनका बचा-खुचा खाऊँ मैं? मैं तो बढ़िया खाना बनाऊँगी शाम को—हरे

पत्ते और चावल और केंकड़े और मिर्ची वाला—और सारे घर वालों के साथ बैठकर खाऊँगी।''

वैसे शबर लोग आम तौर पर अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं। पर मोइना की मां एक पैर से लंगड़ाती थी। वह ज्यादा चल फिर नहीं सकती थी। उसके पिता दूर जमशेदपुर काम की तलाश में गए हुए थे और उसका भाई गोरो जलाऊ लकड़ी लाने जंगल जाता था। सो मोइना को भी काम पर जाना पड़ता था।

उस अक्तूबर मैं समिति के वहां पूरा एक माह रुकी। एक सुबह मोइना ने घोषणा की कि वह समिति वाली झोपड़ी में मेरे साथ रहेगी।

''बिल्कुल नहीं,'' खीरी ने कहा।

''क्यों नहीं, इतनी बड़ी झोपड़ी है। एक बुढ़िया को कितनी जगह चाहिए?''

''तुम्हारे काम का क्या होगा?''

''काम के बाद आया करूंगी।''

और वह एक जोड़ी कपड़े और एक नेवले का बच्चा लिये आ पहुंची। ''ये बस जरा सा खाना खाता है और बुरे सांपों को दूर भगा आता है,'' उसने कहा। ''अच्छे वाले सांपों को मैं पकड़ कर माँ को दे देती हूँ। क्या बढ़िया तरी वाला सांप बनाती है माँ। तुम्हारे लिये भी थोड़ा लाऊंगी।''

हमारी समिति की शिक्षिका मालती बोनाल ने मुझ से कहा, ''आप तो तंग आ जायेंगी उसकी क्यूँ क्यूँ सुनते हुए।'' और वाकई वह अक्तूबर ऐसा बीता कि पूछो मत! ''क्यों मुझे बाबू की बकरियां चरानी पड़ती हैं? उसके लड़के खुद ही कर सकते हैं। मछलियां बोल क्यों नहींपातीं? अगर कई सारे तारे सूरज से भी बड़े हैं तो वो इतने छोटे क्यों नजर आते हैं?''

और हर रात को : ''तुम सोने के पहले किताबें क्यों पढ़ती हो?''

''क्योंकि किताबों में तुम्हारी क्यूँ क्यूँ के जवाब मिलते हैं।''

इस एक बार मोइना चुप रही। उसने कमरा ठीक-ठाक किया, रंगन के फूलों वाले झाड़ को पानी दिया, नेवले को मछली दी। फिर उसने कहा, "मैं पढ़ना सीखूंगी और अपने सारे सवालों के जवाब ढूंढ़ निकालूंगी।"

जो-जो वह मुझसे सीखती, वह बकरियां चराते समय दूसरे बच्चों को बताती। "कई तारे तो सूरज से भी बड़े हैं। सूरज पास है इसलिए बड़ा दिखता है... मछलियां हमारी तरह बातें नहीं करतीं। मछलियों की अपनी भाषा है जो सुनाई नहीं देती... तुम्हें पता है, पृथ्वी गोल है।"

एक साल बाद जब मैं गाँव में दुबारा पहुंची, तो सबसे पहले सुनाई दी मोइना की आवाज। "सकूल क्यों बंद है?" समिति के स्कूल के अंदर एक मिमियाती बकरी को अपने साथ घसीटते हुए उसने मालती को ललकारा।

"क्या मतलब है तुम्हारा 'क्यों बंद है?' "

"मैं भी क्यूँ न पढ़ूं।"

"तो तुम्हें रोक कौन रहा है?"

"पर कोई कक्षा ही नहीं लगी।"

"स्कूल पूरा जो हो चुका।"

"क्यूँ?"

"तुम जानती हो मोइना, मैं सुबह नौ से ग्यारह बजे तक कक्षा लगाती हूँ।"

मोइना ने पांव पटक कर कहा, "तुम समय बदल क्यों नहीं सकती? मुझे बाबू की बकरियां चरानी होती हैं सुबह! मैं तो सिर्फ ग्यारह बजे के बाद ही आ सकती हूँ। तुम पढ़ाओगी नहीं तो मैं सीखूंगी कहां से? मैं बूढ़ी माँ को बता दूंगी कि बकरी चराने वाले या गाय चराने वाले, हम में से कोई भी नहीं आ सकेगा अगर सकूल का समय नहीं बदला तो।"

तभी उसने मुझे देखा और अपनी बकरी ले भाग खड़ी हुई।

शाम को मैं मोइना की झोपड़ी पर गई। चौके की अंगार के पास मजे से बैठी मोइना अपनी छोटी बहन और बड़े भाई को बता

रही थी, "एक पेड़ काटो तो दो पेड़ और लगाओ। खाने के पहले हाथ धो, जानते हो क्यों? पेट दर्द हो जायेगा अगर नहीं धोओगो तो। तुम कुछ नहीं जानते—जानते हो क्यों? क्योंकि तुम समिति की कक्षा में नहीं जाते।"

तुम्हें क्या लगता है, गाँव में जब प्राइमरी स्कूल खुला तो उसमें दाखिल होने वाली पहली लड़की कौन थी?

मोइना।

मोइना अब अठारह साल की है। वह समिति के स्कूल में पढ़ाती है। अगर तुम उसके स्कूल के पास से गुजरो तो निश्चित ही तुम्हें उसकी बेचैन आवाज सुनाई देगी।

"आलस मत करो। सवाल करो मुझसे। पूछो, क्यों मच्छरों को खत्म करना चाहिए... क्यों ध्रुव तारा हमेशा उत्तरी आकाश में ही रहता है।"

और दूसरे बच्चे भी अब सीख रहे हैं पूछना— "क्यों?"

वैसे मोइना को पता नहीं है कि मैं उसकी कहानी लिख रही हूँ। अगर उसे बताया जाये तो कहेगी, "क्यूँ? मेरे बारे में? क्यूँ?"

— महाश्वेता देवी

साथियों,

अक्षरों की धुन पर कहानियों से सजी पहली अंताक्षरी आपके हाथ में है। इसको और मज़ेदार बनाने के लिए आप सरल शब्दों में अपनी कही-अनकही कहानियाँ और सुझाव जल्द से जल्द लिख भेजें।

आपका

शिवसिंह नयाल
बी-6/62 'अलारिप्पु' पहली मंजिल
सफदरजंग इन्क्लेव
नई दिल्ली-110029